एलपीआर निरोधन समिति लोअर सैक्सनी जर्मनी

बेकारिया प्रोगराम

बेकारिया स्टैंडर्डों अनुसार अपराध निरोधन करने में क्वालीटी

निरोधन समिति लोअर सैक्सनी जर्मनी
Landespräventionsrat Niedersachsen
Am Waterlooplatz 5 A
30169 Hannover, Germany

info@beccaria.de

www.beccaria.de
www.lpr.niedersachsen.de
www.beccaria-standards.net

Prevention of and Fight Against Crime 2007
With financial support from the Prevention of and
Fight Against Crime Programme
European Commission
Directorate General Justice, Freedom And Security

बेकारिया स्टैंडर्डों अनुसार अपराध निरोधन करने में क्वालीटी

अपराध निरोधन का मतलब है कि अनेक लोगों और संस्थाओं का आपस में मिल कर एक लक्ष्य के लिए काम करना ताकि अपराधों को रोका जा सके और नगरिकों में सुरक्षा का अहसास अनुभव हो। अपराध और हिंसा के भिन्न-भिन्न कारण और आकार हैं। इनके बारे में विस्तार से जानकारी पाना और इनका प्रभाव से और डट के विरोध करना केवल तब संभव है, जब सब सामाजिक शक्तियां आपस में मिल-जुल इस काम की जिम्मेदारी उठांए और मिल कर साधन ढूंढें। यह ही बोध था जिसके आधार पर जर्मनी में राज्य स्तर पर निरोधन परिषद और अन्य समान समितियों की स्थापना की गयी।

जर्मन संघीय गणराज्य एक संघीय देश है जिसमें 16[1] राज्य सम्मिलित हैं। जर्मनी में अपराध निरोधन का कार्य विशेषकर राज्य और क्षेत्रीय प्रशासन के अधिकार में है। इस समय 14 राज्यों में समितियां स्थापित हैं जिनका कार्य खासकर अपराध के निरोधन से जुड़ा है। यह समितियां अधिकतर गृहमंत्रालय या विधिमंत्रालय में जुड़ी हैं, लेकिन इनकी विशेषता यह है कि इनका कार्य अन्य विभागों तक फ़ैल रखा है।

राज्य लोअर सैक्सोनी में 1995 से अपराध निरोधन के लिए एक विशेष समिति स्थापित है जिसका नाम राज्य निरोधन समिति लोअर सैक्सनी – एलपीआर है (Landespraeventionsrat Niedersachsen – LPR). एलपीआर के 250 से अधिक संस्था-सदस्यों में अनेक क्षेत्रीय प्रशासन, गैरसरकारी संस्थायें तथा मंत्रालय और प्रशासन कार्यालय मौजूद हैं।

राज्य निरोधन समिति लोयर सैक्सनी (एलपीआर) के लक्ष्य और कार्यकलाप:

- एलपीआर क्षेत्रीय प्रशासन के स्तर पर अपराध निरोधन करने में ठोस प्रभाव डालती है।
- एलपीआर नयी धारणाओं का विकास करती है तथा उनको कार्यान्वित करने में उनकी रूपरेखा का चित्रण करती है।
- एलपीआर सुरक्षा को बढ़ावा देती है और अपराध निरोधन करने की क्वालीटि में सुधार लाती है।
- एलपीआर आपस में एक-दूसरे को सूचना और जानकारी देने का एक प्लेटफ़ार्म प्रदान करती है।
- एलपीआर अपराध निरोधन के क्षेत्र में सामन्य नेटवर्क बनाने में और उसे स्थिर रख़ने में सहयोग देती है।
- एलपीआर अपराध निरोधन के क्षेत्र में काम करने वाली संस्थाओं के साथ सहयोग से काम करती है। यह सहयोग केवल राज्य लोअर सैक्सनी तक ही सीमित नही है।
- अपराध निरोधन में निपुणता पाने के लिए एलपीआर एक एजेंसी की तरह सहयोग देती है।
- एलपीआर समस्त समाज से संबधित अपराध निरोधन के लक्षय, विषय-वस्तु और प्रणालियां जनता के सामने पेश करती है।
- नागरिको से अपराध निरोधन के लिए योगदान पाने का कार्य भी एलपीआर ने अपना रख़ा है।

एलपीआर कार्यालय में नौकरी कर रहे अफ़्सर लोअर सैक्सनी के विधिमंत्रालय के कर्मचारी है। एलपीआर के लक्ष्य और कार्य के बारे में विस्तार से सूचना पाने के लिए नेट में www.lpr.niedersachsen.de पर क्लिक करें।

राज्य निरोधन समिति के भिन्न कार्यों में बेकारिया प्रोगराम भी गिना जाता है। इस प्रोगराम को नाम देने वाले इटली के रहने वाले सेज़र बेकारिया (1738-1794) थे। इस कानून के क्षेत्र में फ़िलॉसफ़र और दंडविधि सुधारक का कहना था „यह बेहतर होगा अगर अपराध को रोका जाए, न की उसके लिए सजा दी जाए" (1764). बेकारिया को यूरोपियन और दंडविधि का स्पष्टीकरण करने के लिए एक प्रवर्तक और आधुनिक अपराध राजनीति के अगुआ की तरह माना जाता है।

बेकारिया स्टैंडर्ड के अनुसार अपराध निरोधन योजनाओं में क्वालीटी सुनिश्चित रखना [2]

अभी तक अपराध निरोधन योजनाओं की धारणा, उनके कार्यान्वयन और निरक्षण करने के कोई मपदंड उपलब्ध नही हैं जिनसे उनकी क्वालीटी सुनिश्चित की जा सके। इस जटिल विषय पर विचार-विनिमय अभी राष्ट्रीय और यूरोपियन स्तर पर प्रारंभिक स्थिति में है।

अपराध निरोधन योजनाओं का प्रभावपूर्वक निरक्षण करने के लिए और इनकी उच्च क्वालीटी सुनिश्चित रख़ने के लिए ऐसे स्टैंडर्ड को मापदंड की तरह बनाना ही इस ओर पहला कदम होगा जिनसे निरोधन करने की योजनाओं की धारणा और कार्यान्वयन का निरक्षण किया जा सके।

निम्नलिख़ित बेकारिया स्टैंडर्डों को एक „बेकारिया प्रोजेक्ट: अपराध निरोधन में कवालीटी मेनजमेंट " के अंतर्गत संकलित किया गया। इस प्रोजेक्ट को यूरोपियन कमीशन के AGIS प्रोगराम के अधीन स्थगित किया गया। निरोधन करने के क्षेत्र में बेकारिया स्टैंडर्डों को उच्च क्वालीटी सुनिश्चित रख़ने के लिए प्रशंसनीय माना जाता है। इन्हें स विषय पर विचार-विमर्श करने का प्रारूप समझा जाता है और मिल कर आपस मे विस्तृत रूप से वाद-विवाद द्वारा इनका फ़लस्वरूप सुधार और आगे विकास करना चाहिए।

बेकारिया स्टैंडर्डों का सही रूप से कार्यान्वयन करने के लिए कार्य-सहायक 7 चरणों को www.beccaria.de पर निशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

बेकारिया स्टैंडर्डों में बताया गया है कि क्वालीटी सुनिश्चित रखने के लिए अपराध निरोधन प्रोगरामों और योजनाओं [3] की धारणा, उनका कार्यान्वयन और निरक्षण करने में कौन से मापदंड और आवशकतांए पूरी होनी चाहिए। इनमें प्रोजेक्ट के निम्नलिख़ित सात मुख्य चरणों का उल्लेख़ किया गया है:

1. समस्या का वर्णन करना
2. समस्या पैदा होने की दशा का विश्लेशण
3. निरोधन के, प्रोजेक्ट के और इच्छुक वर्ग के लक्ष्य निर्धारित करना
4. लक्ष्य पाने के लिए उपाय निर्धारित करना
5. प्रोजेक्ट की धारणा और उसका कार्यान्वयन
6. प्रोजेक्ट चलाने के आकार का और उसके द्वारा पाए लक्ष्य का निरक्षण (मूल्यांकन)
7. प्रोजेक्ट का परिणाम और उसकी रिपोर्ट

अपराध निरोधन क्षेत्र में कार्य करने वालों, उसका विकास करने वालों और जिम्मेदारी उठाने वालों के लिए बेकारिया स्टैंडर्ड एक निर्देश-पुस्तिका का रूप है जो उन्हें अपराध निरोधन कार्य में उच्च क्वालीटी पाने में सहायक हैं। इनके द्वारा यह सुनिश्चित रख़ा जा सके कि

- अपराध निरोधन योजनाओं की धारणा, उनका कार्यान्वयन और निरक्षण विज्ञान और प्रकाशन में चर्चित क्वालीटी के मापदंडों अनुसार होना चाहिए
- प्रोजेक्ट की रूपरेख़ा ऐसे बनायी जाए कि उनका मूल रूप से निरक्षण किया जा सके
- इस क्षेत्र में काम कर रहे समस्त लोगों को, जैसे विशेषज्ञ, कार्यकर्ता, नियोजक, वित्तदाता, (प्रोजेक्ट की अनुमति के लिए), प्रोजेक्ट के लक्ष्य और उसकी क्वालीटी का निरक्षण करने के बारे में विशेष जानकारी होनी चाहिए

बेकारिया स्टैंडर्डों में क्वालीटी सुनिश्चित रख़ने के मापदंड और आवशकतांए एक सम्पूर्ण प्रोगराम में लिख़े हैं। केवल सम्पूर्ण प्रोगराम का पालन करने से ही प्रोजेक्ट की क्वालीटी की गरंटी दी जा सकती है। एक-एक मापदंड सदा दूसरे उपर निर्भर है। इसलिए बेकारिया स्टैंडर्ड के एक भाग को छोड़ कर या उस पर ध्यान न देने से उसकी सम्पूर्ण क्वालीटी पर इसका असर पड़ सकता है।

बेकारिया स्टैंडर्ड में निम्नलिख़ित अंकों पर क्रमश रूप से ध्यान देना आवश्यक है और इन्हें इस प्रकार पूरा करना होगा:

1. **बेकारिया स्टैंडर्ड: समस्या का वर्णन करना**

1.1 विद्यमान समस्या (वर्तमान दशा) को पहचानना और उसे विस्तृत करना। इसमें स्पष्ट किया जाए कि

- असलीयत में समस्या क्या है, यह किस रूप में देख़ने को मिली और अपराध के किस विशेष क्षेत्र में यह समस्या उपलब्ध है
- किस निश्चित क्षेत्र में, सीमित स्थल पर यह समस्या पैदा हुई, किस समय और किस मात्रा में
- इस समस्या से किस को निजी या गैर-निजी ढंग से असर हुआ (उनके बारे में विवरण: आयु, लिंग, समाजिक विशेषता, कुल, वंश)
- इस समस्या से सीधे या गैर सीधे ढंग से क्या असर हुआ
- यह समस्या कब से ख़ड़ी है और क्या इसमे (हाल में ही) कोई परिवर्तन दिख़ाई दिया (जैसे इसमें कोई बढ़ाव हुआ या यह किसी खास अवसर पर देख़ने को मिली)
- क्या निश्चित स्थल पर इस समस्या को हल करने की कोशिश की गयी? कौन किस तरह इस पर अभी काम कर रहा है या आगे किस को काम करना होगा (जैसे पुलिस, अध्यापक, बाल-कल्याण कार्यालय, सरकारी वकील)? क्या इसके हल के लिए कोई कदम चुने गये और क्या इनके द्वारा कोई सफ़लता या असफ़लता नजर आ रही है।

1.2 यह स्पष्ट किया जाए कि प्रोजेक्ट चलाने की शुरुआत किसके द्वारा हुई और इसे चलाने का विशेष कारण क्या है (जैसे नागरिको द्वारा शिकायतें, बाल-कल्याण कार्यालय से या पुलिस से मिली सूचना)।

1.3 यह स्पष्ट है कि समस्या का हल करने के लिए कार्य करना आवश्यक है।

2. **बेकारिया स्टैंडर्ड: समस्या पैदा होने की दशा का विश्लेशण**

2.1 समस्या जो निर्धारित की गयी है उसे स्पष्ट करने के लिए सैद्धान्तिक और वैज्ञानिक जांचों के परिणामों का अध्यन किया जाए और उन जानकारियों पर ध्यान दिया जाए जिनका पहले अनुभव हो चुका है ।

2.2 समस्या के मुख्य जाने-माने कारणों पर विचार किया जाए और उन्हें निर्धारित किया जाए – इनमे केवल ख़तरे पैदा4 करने वाले कारण ही नही बल्कि इसकी सुरक्षा5 करने के भी शामिल हों।

3. **बेकारिया स्टैंडर्ड: निरोधन करने के, प्रोजेक्ट के और इच्छुक वर्ग के लक्ष्य निर्धारित करना**

लक्ष्य निर्धारित करते समय असूल के अनुसार निरोधन के और प्रोजेक्ट के लक्ष्यों में अंतर करना आवश्यक है। हर प्रोजेक्ट में सदा उसके निरोधन करने के लक्ष्य तथा प्रोजेक्ट के लक्ष्य को साफ़-साफ़ और स्पष्टता से बताना चाहिए।

निरोधन के लक्ष्य (इन्हें मुख्य लक्ष्य, वैश्विक लक्ष्य या सामन्य लक्ष्य भी कहा जाता है) सदा प्रोजेक्ट के वास्तविक निरोधन विषय पर केन्द्रित होने चाहिए। इसका मतलब है कि (वास्तविक) अपराध में बाधा डालकर उसे रोका जाए (अपराध को रोकना या कम करना) या आत्मगत सुरक्षा में सुधार किया जाए (सुरक्षा के अहसास में बढ़ाव या अपराध से डर लगने में कमी)। उदाहरण के रूप से किसी प्रोजेक्ट का लक्ष्य बनाया जा सकता है कि किसी एक शहर के स्कूलों में किशोरावस्था के विद्यार्थीयों में मारपीट के अपराधों में 30% घटाव किया जाए।

इसकी तुलना में **प्रोजेक्ट के लक्ष्य** हैं जिन्हें किसी प्रोजेक्ट द्वारा सीधे रूप से पाने का प्रयास किया जाए। किसी प्रोजेक्ट में जिसका निरोधन लक्ष्य हो सकता है कि स्कूलों में किशोरावस्था के विद्यार्थीयों में मारपीट के अपराधों में घटाव करना है, तो उसमे निम्नलिख़ित प्रोजेक्ट के लक्ष्य बनाए जा सकते है: स्कूल की सामन्य अवस्था में सुधार लाना, किशोरावस्था के विद्यार्थीयों की समाजिक निपुणता को मजबूत करना, विशेषकर लड़ाई-झगड़े में निपटारा लाना, स्कूल में समाजिक निगरानी तेज करना।

प्रोजेक्ट के लक्ष्यों को सैद्धान्तिक रूप से निरोधन के लक्ष्यों से संबधित होना चाहिए। विश्वसनीय रूप से यह चित्रित किया जाना चाहिए कि प्रोजेक्ट के लक्ष्य प्राप्त कर लेने से उसके साथ संबधित निरोधन के लक्ष्य भी सफ़लता से प्राप्त किए जा सकते हैं।

अपराध विज्ञान के सिद्धान्तों और सिद्धान्तों पर आधारित धारणाओं या अनुभव की जानकारियों के बल पर प्रोजेक्ट के लक्ष्यों को प्रदर्शित किया जा सकता है कि प्रोजेक्ट के लक्ष्य निरोधन करने का आधार हैं– अपने उदाहरण को दिख़ाते हुए – „स्कूल की सामन्य अवस्था में सुधार लाने से“, „किशोरावस्था के विद्यार्थीयों की समाजिक निपुणता को मजबूत करने से - विशेषकर लड़ाई-झगड़ों को निपटाने से“ और „स्कूल में समाजिक निगरानी तेज करने से“ हर हाल में अपराध का निरोध किया जा सकता है तांकि निरोधन का लक्ष्य „स्कूलों में किशोरावस्था के विद्यार्थीयों में मारपीट के अपराधों का घटाव" पाने में सफ़लता हो।

3.1 निरोधन के लक्ष्यों को स्पष्ट किया जाए। समस्या के वर्णन करने से इन्हें निर्धारित किया जाए, स्पष्टता से इनके बारे में बताया जाए, इनका माप किया जा सके और इच्छुक आदर्श अवस्था का वर्णन किया जाए।

3.2 यह स्पष्ट किया जाए कि निरोधन के लक्ष्य किस इच्छुक वर्ग से संबधित हैं।

3.3 कुछ संकेत (अंक) उपलब्ध है जिनकी सहायता से निरक्षण किया जा सकता है कि क्या निरोधन के लक्ष्य सफ़ल हो सके, अगर हां तो किस सीमा तक ।

3.4 ऐसी नीतियां या निरोधन के तरीके चुने जांएगे जिन के द्वारा स्पष्ट किये गये निरोधन के लक्ष्यों को सफ़लता से पाया जा सके। प्रयोग में लाने वाली नीतियों या अपराध निरोधक तरीकों के चुनने के कारणों को स्पष्ट किया जाए। प्रकाशनों से मिली जानकारी और प्रयोग से पाये अनुभव पर ध्यान दिया जाए। प्रोजेक्ट के लक्ष्यो को चुनी नीतियों और अपराध निरोधक तरीकों6 के आधार पर निश्चित रूप से परिभाषित किया जाए।

3.5 यह स्पष्ट किया जाए कि किस इच्छुक वर्ग से प्रोजेक्ट के लक्ष्य संबधित हों। यह आवश्यक है कि इच्छुक वर्ग के बारे में स्पष्टता से वर्णन किया जाए (उदाहरण के रूप से उनकी आयु बारे और समाजिक स्थिति बारे सूचना)

3.6 यह बताना आवश्यक है कि किस अवधि या तीथि (कितना समय) तक प्रोजेक्ट के पाने वाले लक्ष्य सफ़लता से प्राप्त हो जाने चाहिए।

4. बेकारिया स्टैंडर्ड: लक्ष्य पाने के लिए उपाय निर्धारित करना

4.1 प्रोजेक्ट के लक्ष्य को पाने के लिए अनुकूल कदम निर्धारित किए जांए और उनके कारण स्पष्ट किए जांए।

4.2 यह स्पष्ट किया जाए कि चुने कदमों की सहायता से प्रोजेक्ट के लक्ष्यों को इच्छुक वर्ग में सफ़लता से पाया जा सकता है (क्या इच्छुक वर्ग के साथ मिलकर काम करने से या उनके हिस्सा लेने से यह सफ़लता मिल सकती है)

4.3 प्रोजेक्ट के कार्यान्वयन के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है, जैसे समय, सहकर्मी, विशेषज्ञ, धन-राशि, सामग्री आदि, उनका विश्वसनीय रूप से वर्णन किया जाए।

4.4 कुछ संकेत (अंक) उपलब्ध है जिनकी सहायता से निरक्षण किया जा सकता है कि क्या प्रोजेक्ट के लक्ष्य सफ़ल हो सके, अगर हां तो किस सीमा तक ।

4.5 कुछ संकेत (अंक) उपलब्ध है जिनकी सहायता से निरक्षण किया जा सकता है कि क्या इच्छुक वर्ग से संबंध उपयुक्त है, अगर हां तो किस सीमा तक ।

5. बेकारिया स्टैंडर्ड: प्रोजेक्ट की धारणा और उसका कार्यान्वयन

5.1 प्रोजेक्ट की धारणा लिख़ित रूप में पेश की जाए जिसमें मुख़्य सोच-विचार और कार्यक्रम समस्त रूप से लिख़े हों और जो प्रोजेक्ट की स्थापना, उसके निर्धारण, उसकी रचना, उसके कार्यान्वयन और निरक्षण के लिए आवश्यक हैं।

5.2 अन्य सहायक संघों के साथ जिन के साथ मिलकर काम करने की संभावना हो और उनके सहयोग के बारे में स्पष्टता से वर्णन हो। नेटवर्क लक्ष्यपूर्ण, योग्य और लाभदायक हो।

5.3 प्रोजेक्ट चलाने के लिए साधन पाने की रूपरेखा लिख़ी हो जिसमें स्पष्ट किया जाए कि इसे चलाने के लिए अनुमान से कितना समय, कितने सहकर्मियों, विशेषज्ञों, कितनी धनराशि और सामग्री की आवश्यकता होगी।

5.4 प्रोजेक्ट की अवधि निश्चित हो।

5.5 किसी अन्य बाहरी विशेषज्ञ या ग्रुप (किसी अन्य संस्था या बाहरी व्यक्ति) द्वारा प्रोजेक्ट की धारणा का निरक्षण या जांच की गयी हो।

5.6 प्रोजेक्ट की रूपरेख़ा में पेश किया गया प्रोजेक्ट का ख़र्चा तथा उसकी तुलना में अपेक्षित नतीजों और परिणामों (प्रोजेक्ट के इच्छुक लक्ष्य) को प्रोजेक्ट के उत्तरदायीयो, अन्य बाहरी विशेषज्ञ या ग्रुप द्वारा परिक्षत किया गया है और इसे उपयुक्त और अनुकूल पाया गया है। आयोजित प्रोजेक्ट की जगह अन्य संभावानाओं पर भी निरक्षण किया गया है।

5.7 प्रोजेक्ट के भिन्न चरणों में कौन उत्तरदायी और जिम्मेवार होगा, इस बारे सब निश्चित किया जाए। प्रोजेक्ट में भाग लेने वालों (प्रोजेक्ट-मालिक, प्रोजेक्ट-उत्तरदायी, आवश्यकता अनुसार इच्छुक वर्ग, सहयोग देने वाले अन्य भागीदारों) के आपस में बने समझौतों को लिख़ित रूप मे तय किया जाए।

5.8 प्रोजेक्ट कार्यान्वयन करने की परियोजना बनायी जाए जिसमें अलग-अलग चरणों के बारे मे विस्तार से लिख़ा हो, उसे चलाने वाले अधिकृत व्यक्तियों के बारे में तथा हर चरण की निश्चित अवधि बारे लिख़ा हो।

5.9 केवल प्रोजेक्ट कार्यान्वयन करने का निरक्षण (विधि का मूल्यांकन) ही नही, बल्कि प्रोजेक्ट के परिणामों (नतीजों का मूल्यांकन) का निरक्षण भी आरम्भ से ही प्रोजेक्ट चलाने की परियोजना में शामिल किया जाए।

- विधि का मूल्यांकन किया जाए। यह करने के लिए प्रोजेक्ट कार्यान्वयन करने का निरक्षण तथा इच्छुक वर्ग तक पहुंचने की धारणा बनायी गयी है और इस धारणा को प्रोजेक्ट चलाने की परियोजना में शामिल किया गया है।
- यह निश्चित है और स्पष्ट किया जाए कि क्या प्रोजेक्ट के और निरोधन के लक्ष्यों के परिणामों का निरक्षण करना होगा (नतीजों का मूल्यांकन)। अगर निरक्षण करना है तो उसकी जांच के लिए एक योजना बनानी होगी। प्रोजेक्ट की धारणा करने के समय ही इस निरक्षण करने की योजना पर विचार करना होगा।
- यह निश्चित है और स्पष्ट किया जाए कि क्या निरक्षण स्वंय करना होगा और /या बाहर से करवाना होगा। अगर निरक्षण स्वंय करना है तो इस पर विचार करना होगा कि इस बारे बाहर के विशेषज्ञ द्वारा परामर्श लेना क्या आवश्यक समझा जाता है।

5.10 प्रोजेक्ट के चरणों का घटनाक्रम और उसके कार्यान्वयन का वर्णन आरम्भ से ही लिख़ित रूप में किया जाये। प्रोजेक्ट कार्यान्वयन करने के सब चरणों के बारे में और इसकी तुलना में उन अंतरों का विवरण तथा स्पष्टीकरण किया जाए जो आरंभिक योजना से भिन्न हुए हो।

5.11 प्रोजेक्ट की रचना को बदलती स्थिति अनुसार अनुकूल बनाया जाए। अगर कोई कमजोरी दिख़ाई दे तो उसके सुधार के साधनों को निर्धारित किया जाए।

6. बेकारिया स्टैंडर्ड: प्रोजेक्ट चलाने के आकार का और उसके द्वारा पाए लक्ष्य का निरक्षण (मूल्यांकन)

6.1 यह निर्धारित किया जाए कि किस सीमा तक इच्छुक वर्ग तक पहुंचने में सफ़लता मिली (उनका हिस्सा, संख़्या)। यह चित्रण किया जाए कि इच्छुक वर्ग तक पहुंचने में सफ़लता या असफ़लता का कारण क्या था।

6.2 यह निर्धारित किया जाए कि किस सीमा तक क्या परिवर्तन हुए: किस सीमा तक निरोधन करने के लक्ष्य प्राप्त हो सके (वर्तमान दशा और इच्छुक दशा की तुलना)। किस सीमा तक प्रोजेक्ट के लक्ष्य प्राप्त हो सके (वर्तमान दशा और इच्छुक दशा की तुलना)।

6.3 यह निर्धारित और चित्रण किया जाए कि क्या यह परिवर्तन कार्यान्वित चरणों के कारण से हो सके, अगर हां तो किस सीमा तक। किस कारण निरोधन करने के लक्ष्य पाने में सफ़लता या असफ़लता मिली ? किस कारण प्रोजेक्ट के लक्ष्य पाने में सफ़लता या असफ़लता मिली?

6.4 यह निर्धारित किया जाए कि कोई ऐसे प्रभाव देख़ने को मिले जिनके बारे में पहले विचार नही किया गया था: अगर हां तो किस प्रकार के और किस सीमा तक यह पैदा हुए?

7. बेकारिया स्टैंडर्ड: प्रोजेक्ट का परिणाम और इसकी रिपोर्ट

7.1 प्रोजेक्ट के ख़त्म होने पर विस्तार से रिपोर्ट लिख़ी जाए। इस रिपोर्ट में प्रोजेक्ट के बारे में मुख़्य जानकारी तथा उसका परिणाम लिख़ित रूप में एक अंतिम रिपोर्ट की तरह प्रमाणित किया जाए और इस विषय में कार्य करने वाले और रूचि रख़ने वाले दर्शकगण को इस प्रोजेक्ट के पेपर और इसके परिणाम पेश किए जांए।

7.2 प्रोजेक्ट से पायी मुख़्य जानकारी को सम्पादित किया जाए:

- किस सीमा तक परियोजित लक्ष्य प्राप्त हो सके (प्रोजेक्ट के और निरोधन करने के लक्ष्य)?
- नतीजों का प्रोजेक्ट पर क्या असर है?
- लक्ष्य पाने में सफ़लता या असफ़लता के क्या कारण हैं?
- प्रोजेक्ट की धारणा और कार्यान्वयन में कौन सी कठिनाईयां पैदा हुई और इसके द्वारा किस प्रकार के अनुभव हुए – अच्छे और बुरे?
- इसके अतिरिक्त क्या कोई अन्य जानकारी पायी गयी?

7.3 प्रोजेक्ट के परिंणामों से पायी जानकारीयों और प्रोजेक्ट के अनुभवों से परिणाम निकाले जाते हैं:

- क्या प्रोजेक्ट चलाने का तरीका सही सिद्ध हुआ? क्या इसका विकास किया जा सकता है?
- इसके दौरान जो कमजोरीयां देख़ने को मिली क्या उनके सुधार के लिए और उनको हटाने के लिए कोई हल संभव है या इस संबधित कोई राय दी जा सकती है?
- क्या कोई ऐसे प्रशन खड़े हुए जिन्हें a) भविष्य के प्रोजेक्टों में विषय के रूप मे लिया जा सकता है b) भविष्य के प्रोजेक्टों में उनके मुल्यांकन के लिए प्रयोग किया जा सकता है?
- प्रोजेक्ट से मिले परिणामों से कौन से पार्टनर या कौन सी अन्य संस्थांए विशेषकर लाभ उठा सकती हैं?
- क्या पायी जानकारी किसी चल रहे प्रोजेक्ट की दशा को अनुकूल करने में या उसमे परिवर्तन लाने में प्रयोग की जा सकती है या प्रोजेक्ट को सम्भव आगे चलाने में उसका विकास कर सकती है?
- प्रोजेक्ट की अवधि को किस तरह स्थाही रख़ा जा सकता है (उदाहरण के रूप से किसी वर्तमान प्रोजेक्ट में उसे संघटित करने से)?
- क्या प्रोजेक्ट को अन्य इच्छुक वर्गों के लिए और अन्य समाजिक परिस्थितियों में चलाया जा सकता है?

7.4 प्रोजेक्ट की रिपोर्ट लिख़ी जाए। इसमें विस्तृत रूप से लिखा जाए:

- प्रोजेक्ट की धारणा
- प्रोजेक्ट का कार्यान्वयन
- प्रोजेक्ट के नतीजे
- मूल्यांकन के नतीजे
- प्रोजेक्ट-लक्ष्य में प्राप्त हुए नतीजों का मुल्यांकन करने के लिए इवैल्यूऍशन प्लान बनाया जाए, जिसमें आवश्यकता अनुसार थोड़ी संख़्या में अलग-अलग नमूनों और संकेतों का या मानदंड का चित्रण किया गया हो।
- अंतिम परिणाम

7.5 प्रोजेक्ट की रिपोर्ट अन्य लोगों को उपलब्ध होनी चाहिए। प्रोजेक्ट के परिणाम का प्रकाशन किया जाए।

[1] बादेन-वुर्तेम्बर्ग, बवारिया, बर्लिन, ब्रैंडनबर्ग, ब्रेमेन, हैम्बर्ग, हेसेन, मेक्लेनबर्ग-फ़ोरपोमेर्न, लोअर सैक्सनी, उत्तरी राइन वेस्टफ़ेलिया, राइन्लैंड, सारलैंड, सैक्सनी, सैक्सनी-एन्हाल्ट, श्लेसविग-होल्सटीन, थ्यूरिंगिया

[2] संपादक: राज्य निरोधन समिति लोअर सैक्सनी। बेकारिया स्टैंडर्ड 2005 का उल्लेख इन्होने किया: Volkhard Schindler, Jörg Bässmann, Anja Meyer, Erich Marks, Ruth Linssen. www.beccaria.de

[3] यहां केवल प्रोजेक्टों के बारे में लिख़ा गया है, लेकिन इनमें प्रोगराम भी शामिल समझे जांए।

[4] ख़तरा पैदा करने वाले कारण वे है जिन से बरताव में दुरूस्त असर पड़े, उदाहरण के रूप से बच्चे की परवाह नही करना, युवजन का बराबर उम्र के अपराधियों से संपर्क, मुहल्लों की बरबादी।

[5] सुरक्षा रख़ने के कारण वे है जिन से अपराध कम हो सकते हैं या जिनसे उन्हें रोका जा सकता है। उदाहरण के रूप से युवाजन का अपने मां-बाप से अच्छा मानसिक लगाव, कारों में अलार्म लगाना, सार्वजनिक स्थानों पर जहां डर लगने की संभवता हो सकती है, वहां अच्छी दृष्टि से और बिजली लगाने से रोशनी प्रदान करना।

[6] यह जरूरी नही कि प्रोजेक्ट -लक्ष्यों के इच्छुक वर्ग निरोधन-लक्ष्यों के इच्छुक वर्ग के समान हो। चर्चित उदाहरण में प्रोजेक्ट-लक्ष्य „स्कूल की सामन्य अवस्था में सुधार लाना“ का इच्छुक वर्ग अध्यापक (स्कूल के अध्यक्ष) हैं, लेकिन इसकी तुलना में निरोधन-लक्ष्य के इच्छुक वर्ग युवाजन हैं।